



**INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH –
GRANTHAALAYAH**
A knowledge Repository



मानव स्वास्थ्य एवं प्रदूषण

गीताली सेनगुप्ता

माखन लाल चतुर्वेदी शासकीय स्नानकोत्तर कन्या महाविद्यालय, खण्डवा



“स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।” उत्तम स्वास्थ्य प्रत्येक मनुष्य के लिए अमूल्य निधि है, दीर्घ आयु एवं उत्तम स्वास्थ्य का अटूट बंधन है। इस संदर्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दी गई परिभाषा सर्वमान्य है – “स्वास्थ्य संपूर्ण शारीरिक, मानसिक व सामाजिक निरोगता की अवस्था है तथा मात्र बीमारी या दुर्बलता की अनुपस्थिति को स्वास्थ्य नहीं माना जा सकता है।” अर्थात् स्वास्थ्य एक सामान्य व्यक्ति के लिए स्वस्थ वातावरण में, स्वस्थ परिवार में, स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग का वास है।

प्राकृतिक वातावरण की सुंदरता पेड़ – पौधे, जीव – जंतुओं, नदी – तालाब, पर्वत – सागरों से बनती बिगड़ती है। पर्यावरण और मनुष्य का अटूट बंधन है। प्रदूषण की समस्या विश्वव्यापी है इस विकराल एवं भयावह समस्या ने जन जीवन को संकट में डाल दिया है स्थानीय संगठनों व व्यक्तियों से लेकर संयुक्त राष्ट्रसंघ यू.एन.ओ. तक इस समस्या से चिंतित है।

यह समस्या मुख्य रूप से विज्ञान की देन है। आज स्थिति इतनी विकराल है कि मनुष्य शुद्ध हवा के लिए तरसता है, उसका जीना दूभर हो रहा है, तथा प्राकृतिक ऋतु चक्र में भी परिवर्तन हो गया है, जिसका मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव देखा जा रहा है और वह कोई न कोई बीमारी से अवश्य ही ग्रसित पाया जाता है।

उद्देश्य

- पर्यावरण के प्रति जनमानस में सकारात्मक सोच को विकसित करना ।
- प्रदूषण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना ।
- प्रदूषण एवं स्वास्थ्य का कोई परस्पर सम्बन्ध है क्या? इस तथ्य को ज्ञात करना ।
- विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से उत्पन्न होने वाली बीमारियों का पता लगाना ।

उपकल्पना

भिन्न – भिन्न प्रकार के प्रदूषण (जैसे वायु, जल, ध्वनि) का दुष्प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता होगा ।

अध्ययन पद्धति

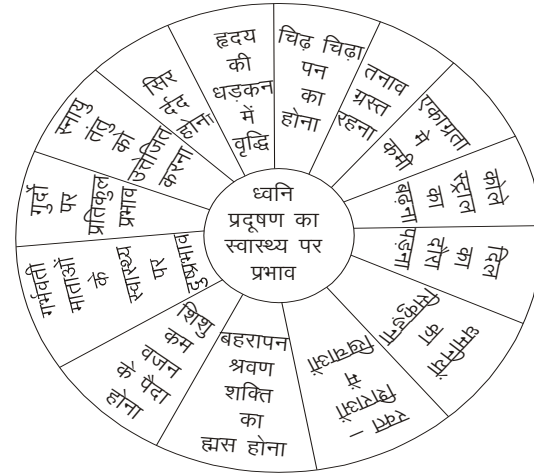
अध्ययन पद्धति के रूप में द्वैतियक स्रोत अर्थात् पत्र पत्रिकाओं, पेम्पलेट्स, सरकारी अभिलेखों एवं ऑकड़ों एवं इंटरनेट का प्रयोग किया गया । प्रस्तुत शोध पत्र में प्रदूषण एवं स्वास्थ्य के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों को एकत्रित कर यह जानने का प्रयास किया गया कि वास्तव में क्या प्रदूषण का हमारे मानव स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है ।

ध्वनि प्रदूषण

आधुनिक सभ्यता के रूप में चल रहा यह शोर (ध्वनि) प्रदूषण अनोखा है । पिछले कुछ दशकों से इस समस्या ने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है । इस समस्या का उद्भव औद्योगीकरण, यातायात के आधुनिक साधनों, जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण तथा बढ़ती मानवीय गतिविधियों का हस्तक्षेप है । दिल्ली, कोलकाता एवं चेन्नई में 90 डेसीबल से भी अधिक शोर मापा गया है ।

ध्वनि प्रदूषण

क्र.	ध्वनि प्रदूषण	डेसीबल में
1	मशीनगन की ध्वनि	130 डेसीबल
2	सड़क के वाहनों की ध्वनि	70 डेसीबल
3	अंतरिक्ष यान प्रक्षेपण	170 डेसीबल
4	टर्बाजेट इंजन की ध्वनि	170 डेसीबल



मनुष्य की श्रवण क्षमता 40 डेसीबल तक मानी गई है किन्तु आधुनिक शोध से यह ज्ञात हुआ है कि अन्तर्राष्ट्रीय मापदण्ड के अनुसार 56 डेसीबल तक का शोर सहन किया जा सकता है । इससे अधिक का शोर मानव स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करता है । ध्वनि प्रदूषण का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, निम्न चक्र से यह स्पष्ट दर्शाता है ।

सर्वेक्षण के अनुसार अधिक शोर शराबे वाले स्थान पर स्थायी तौर से रहने वाले स्थायी तौर पर बहरेपन का शिकार हो जाते हैं –

क्र.	विभिन्न उद्योग	बहरेपन का प्रतिशत
1	फाउड्री उद्योग	40 प्रतिशत
2	तेल मिलों में	32.7 प्रतिशत
3	कपड़ा मिलों में	32.6 प्रतिशत
4	रिफाइनरी	28.2 प्रतिशत
5	उर्वरक करखानों में	19.8 प्रतिशत
6	बिजली कम्पनी	0.8 प्रतिशत

वायु प्रदूषण

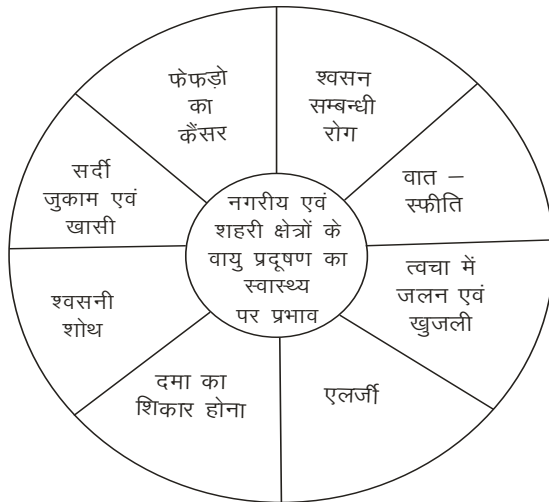
वायु प्रकृति द्वारा प्रदत्त निःशुल्क उपहार है और यह मानव जीवन की आधारशिला है । प्रकृति से उपहार स्वरूप मिली इस जीवनदायिनी वायु को क्या हो गया है ? यह न दिखने वाली वायु अब दिखने वाली क्यों हो गई— काले धुएँ एवं धूल के कणों से व्याप्त ? महानगरों में सांस लेने के लिए एयर मास्क की आवश्यकता पड़ने लगी है, अन्यथा आदमी का दम घुटता है । वायु मंडलीय वातावरण असंतुलित हो रहा है जो वायु प्रदूषण के रूप में हमारे समक्ष भयावह रूप में दिखाई दे रहा है । नगरीय क्षेत्रों, ग्रामीण क्षेत्रों एवं घरेलू क्षेत्र उत्पन्न वायु प्रदूषण किस प्रकार मनुष्य के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहा है यह निम्न तालिकाओं द्वारा जाना जा सकता है ।

तालिका क्र. 01
ग्रामीण क्षेत्रों में वायु प्रदूषण

क्र.	उत्पन्न वायु प्रदूषण	स्वास्थ्य पर प्रभाव
1	पौधों के डंठल व पशुओं के गोबर से बने उपलो का प्रयोग	उत्पन्न धुएँ से गृहणियों की आखों पर सूजन आना, श्वास सम्बन्धी कठिनाईयाँ उत्पन्न होना

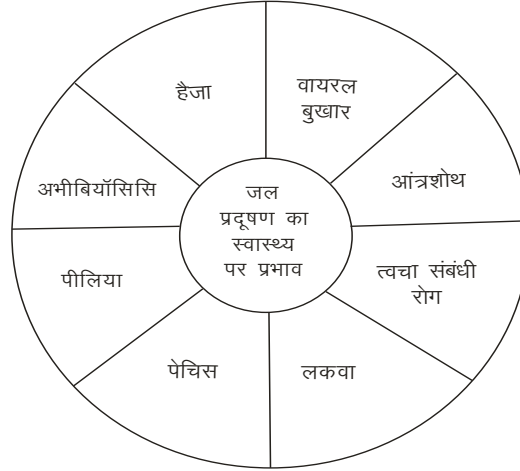
तालिका क्र. 02
घरेलु वायु प्रदूषण

क्र.	प्रयुक्त साधन	स्वास्थ्य पर प्रभाव
1	पेट्रोलियम गैस (एल.पी.जी.) से उत्पन्न हानिकारक गैस	सल्फरडाइ ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड तथा ओजोन का स्वास्थ्य पर प्रदूषण
2	भोजन बनाने हेतु प्रयुक्त तेल का धुँआ	आँख, नाक एवं गले में जलन उत्पन्न करता है ।
3	गैस चूल्हों से उत्पन्न उपमा का प्रभाव ।	आँखों एवं फेफड़ों से संबंधित रोग ।
4	प्लास्टिक, रेजिन व संस जको के प्रयोग से	कैंसर होने की पुष्टि ।
5	बेगान, डी.डी.टी. का प्रयोग	श्वास द्वारा शरीर में पहुँचकर हानि पहुँचाती है ।
6	घरों में धूम्रपान, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का से उत्पन्न धुँआ	फेफड़ों का कैंसर व श्वास संबंधी तकलीफ होना ।
7	तम्बाकू का सेवन	विटामिन सी की कमी उत्पन्न करना, हृदयाघात, स्क का थक्का जमना, मुँह एवं श्वासनली का कैंसर ।



जल प्रदूषण

जल का कोई विकल्प नहीं है इसलिये जल को अमृत या जीवन कहा गया है हमारे शरीर में 70 प्रतिशत, सब्जियों में 95 प्रतिशत और मांस में 60 प्रतिशत जल पाया जाता है । जल के अभाव में जीव समुदाय जीवित नहीं रह सकता है । प्रदूषित एवं गंदे जल के हानिकारक कीटाणु स्वास्थ्य को अत्यधिक क्षति पहुँचाते हैं ।



दिल्ली एवं कोलकाता वायु प्रदूषण की दौड़ में विश्व में तीसरे स्थान पर है ।

निष्कर्ष

- उपकल्पना के आधार पर तथ्यात्मक अध्ययन से यह बात प्रमाणित हो जाती है कि वास्तव में मनुष्य के स्वास्थ्य पर प्रदूषण का बुरा प्रभाव पड़ता है ।
- वर्तमान में विभिन्न प्रकार के जटिल रोग प्रदूषण की देन है कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा ।
- राष्ट्रीय – अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदूषण को दूर करने हेतु अनेक प्रयास जारी है जैसे विश्व वन दिवस, जल दिवस, पर्यावरण दिवस इत्यादि ।
- वर्ष में एक दिन दिवस मनाकर खानापूर्ति कर लेने से क्या प्रदूषण की समस्या सुलझा सकेगी कदापि नहीं ।
- इस हेतु निरन्तर प्रयास की आवश्यकता है ।
- वायु, जल व ध्वनि प्रदूषण की तह तक पहुँचकर इस समस्या को नियंत्रित करने की अत्यन्त आवश्यकता है ।
- प्रदूषण की समस्या से निजात पाने के लिए विद्युत चालन, वाहनों एवं सूर्य की उर्जा पर अधिक निर्भर रहना होगा ।

सुझाव

प्रदूषण ने महात्रासदी का रूप धारण कर लिया है अतः सभी जनमानस पर इसका दुष्प्रभाव देखा जा रहा इस हेतु प्रत्येक व्यक्ति का परम कर्तव्य है कि वह इस प्रदूषण रूपी यज्ञ में आहुति प्रदान करे ध्वनि, वायु एवं जल प्रदूषण को रोकने हेतु निम्न सुझाव है –

- ध्वनि प्रदूषण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए जन जागरण कार्यक्रम बनाए जाए ।
- विवाह समारोह, पार्टी एवं धार्मिक आयोजनों के समय लाउड स्वीकरों को बजाने पर पूर्ण नियंत्रण हो ।
- उद्योग धंधों की मशीनों में साइलेंसर का इस्तेमाल किया जाए ।
- कठोर कानून बनाए जाने के साथ उनका सख्ती से पालन भी हो जिससे सड़को, कारखानों तथा सार्वजनिक स्थानों पर शोर कम हो सके ।
- पर्यावरण को स्वच्छ एवं शुद्ध बनाने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाए ।
- दुपहिया वाहनो, तिपहिया वाहनो, मोटरकारों तथा ट्रको के प्रदूषण स्तर की नियमित जाँच होना चाहिए ।
- विभिन्न प्रकार की फेक्ट्रियों को शहर से बाहर स्थापित करने की अनुमति दी जाए ।

- वनो के कटाव को रोका जाए इस हेतु सख्त नियम कानून बनाए जाए ।
- कारखानों के चिमनियों की ऊँचाई बढ़ायी जाए ।
- प्रचार प्रसार निरन्तर किया जाना चाहिए ।
- नदियों, नालियों जलाशयों की सफाई पर पर्याप्त गंदे जल को स्वच्छ करने के लिए फिटकरी का प्रयोग करे एवं जल को उबालकर पीए ।
- कुँओ मे समय पर लाल दवा का छिड़काव करे तथा लोहे को जाली से कुएँ को ढकना चाहिए ताकि गदगी व कूड़ा कर्कट न जा सके ध्यान दिया जाना चाहिए ।
- विभिन्न धार्मिक आयोजनों एवं पर्वों पर मूर्तियों छोटी – छोटी हो एवं प्लास्टर ऑफ पेटिस से न बनी हो ।
- पूजन सामग्री, हारफूल, माला व अन्य सामग्री नदी, कुँओं आदि में विसर्जित न करे ।
- मुर्दों को जलाने के लिए विद्युत शवदाह गृहों का अधिक से अधिक निर्माण किया जाए ।

संदर्भ

1. गोस्वामी सुबिद्धि – पर्यावरण संरक्षण, श्याम प्रकाशन, जयपुर
2. गोयल एम.के. – पर्यावरण शिक्षा
3. केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा वेबसाईट जारी जानकारी के आधार पर
4. पर्यावरण संचेतना – 1998
5. रघुवंशी अरुण एवं रघुवंशी चद्रलेखा – पर्यावरण तथा प्रदूषण मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रथ अकादमी भोपाल
6. सिंह निशांत – पर्यावरण और जलप्रदूषण, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
7. सनी वी.पी. – पर्यावरण और प्रदूषण, पाइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर
8. www.timesofindia – indiatimes.com
9. www.eliteessayservice.com
10. www.sharyouressay.com
11. योजना मासिक पत्रिका, नई दिल्ली, मई 2012